Gyansindu Coaching Classes

Join – Whatsapp Channel By Link

Subscribe for Live Class

कक्षा 10 – हिंदी

महामैराथन क्लास

गद्यांश+पद्यांश+व्याकरण+संस्कृत+पत्र

गद्यांश

(1) "मैं ब्राह्मणी हूँ, मुझे तो अपने धर्म-अतिथि देव की उपासना का पालन करना चाहिए, परन्तु यहाँ नहीं-नहीं सब विधर्मी दया के पात्र नहीं। परन्तु यह दया तो नहीं कर्तव्य करना है। तब ?" मुग़ल अपनी तलवार टेककर उठ खड़ा हुआ। ममता ने कहा "क्या आश्चर्य है कि तुम भी -छल करो, ठहरो।" "छल! नहीं तब नहीं स्त्री! जाता हूँ, तैमूर का वंशधर स्त्री से छल करेगा? जाता हूँ। भाग्य का खेल है।" [801 (DF) 2023]

प्रश्न- (i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर- पाठ का नाम- 'ममता' तथा लेखक 'जयशंकर प्रसाद' जी हैं।

प्रश्न- (ii) "छल ! नहीं तब नहीं स्त्री ! जाता हूँ, तैमूर का वंशधर स्त्री से छल करेगा ? जाता हूँ ।" वाक्य किसने कहा और क्यों कहा?

उत्तर- "छल! नहीं, तब नहीं स्त्री! जाता हूँ।" यह कथन हुमायूँ द्वारा ममता से कहा गया, हुमायूँ ने कहा तैमूरवंशी कुछ भी कर सकते हैं, परन्तु किसी स्त्री के साथ छल कभी नहीं कर सकते।

प्रश्न- (iii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या – प्रसाद जी कहते हैं कि जब हुमायूँ ममता की झोंपड़ी में शरण लेता है, तब ममता के मन में अन्तर्द्वन्द्व चलता है कि वह हुमायूँ की मदद करे अथवा नहीं। ममता मन-ही-मन विचार करती है कि मैं तो ब्राह्मणी हूँ और

सच्चा ब्राह्मण कभी अपने धर्म से विमुख नहीं होता, इसलिए मुझे तो अपने अतिथि-धर्म का पालन करना ही चाहिए और उसकी सेवा करनी चाहिए, परन्तु दूसरी ओर उसके मन में विचार आया कि यह तो अत्याचारी, पापी है।

इन मुगलवंशियों ने तो मेरे पिताजी की हत्या की थी। यदि कोई और पापी होता तो उसके प्रति दया दिखाकर उसे सहारा दिया जा सकता था, परन्तु पिता की हत्या करने वाले को कभी नहीं। एक बार पुनः उसके मन में विचलन होना आरम्भ हो जाता है और वह कहती है-मैं इसके ऊपर दया-भाव तो नहीं दिखा रही हूँ, परन्तु अपना कर्त्तव्य निर्वाह कर रही हूँ।

प्रश्न- (iv) ममता के मन में क्या अन्तर्द्वन्द्व चल रहा था?

उत्तर- ममता के मन में अन्तर्द्वन्द्व चल रहा था कि हुमायूँ की मदद करे अथवा नहीं।

प्रश्न- (v) ममता मन-ही-मन क्या विचारती है?

उत्तर- ममता मन-ही-मन यह विचारती है कि मैं तो ब्राह्मणी हूँ और सच्चा ब्राह्मण कभी अपने धर्म से विमुख नहीं होता।

प्रश्न- (vi) 'क्या आश्चर्य है कि तुम छल करो।' यह कथन किसने, किससे कहा और क्यों?

उत्तर- "क्या आश्चर्य है कि तुम भी छल करो।" यह कथन ममता ने हुमायूँ से कहा, क्योंकि ममता के पिता की हत्या भी मुगलों ने छल से ही की थी।

(2)यह एक नैतिक और आध्यात्मिक स्रोत है, जो अनन्तकाल से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सम्पूर्ण देश में बहता रहा है और कभी-कभी मूर्त रूप होकर हमारे सामने आता रहा है। यह हमारा सौभाग्य रहा है कि हमने ऐसे ही मूर्त रूप को अपने बीच चलते-फिरते, हँसते-रोते भी देखा है और जिसने अमरत्व की याद दिलाकर हमारी सूखी हड्डियों में नई मज्जा डाल हमारे मृतप्राय शरीर में नए प्राण फूँके और मुरझाए हुए दिलों को फिर खिला दिया। वह अमरत्व सत्य और अहिंसा का है, जो केवल इसी देश के लिए नहीं, आज मानवमात्र के जीवन के लिए अत्यन्त आवश्यक हो गया है।

प्रश्न: (i)उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर- सन्दर्भ- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'गद्य-खण्ड'के 'भारतीय संस्कृति'नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक डॉ० राजेन्द्रप्रसाद हैं।

प्रश्न- रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- रेखांकित अंशों की व्याख्या - डॉ० राजेन्द्र प्रसाद कहते हैं कि भारत की राष्ट्रीय एकता की प्राण शक्ति इसकी नीति और इसके अध्यात्म में निहित है। वास्तविकता यह है कि भारतीय संस्कृति में पवित्र चरित्र तथा आत्मा सम्बन्धी चिन्तन का झरना सदा से ही अबाध गति से बहता रहा है। यह झरना कभी स्पष्ट दिखता हुआ और कभी परोक्ष रूप में बहता रहा है। हमारे सामने समय-समय पर उच्च चरित्रवाले तथा धार्मिक एवं आत्मिक चेतना से सम्पन्न महापुरुष आते रहे हैं। यह हमारा सौभाग्य ही

कहा जाएगा कि आधुनिक युग में इस चरित्र और अध्यात्म की सजीव एवं साकार मूर्ति, महात्मा गांधी के रूप में हमारा नेतृत्व कर रही थी। नैतिक एवं आध्यात्मिक चेतना के इस मूर्त रूप को अर्थात् महात्मा गांधी को प्रत्यक्ष रूप से हमने चलते-फिरते तथा हँसते-रोते भी देखा है। जिस अमर तत्त्व ने भारत को नवीन जीवन और स्फूर्ति प्रदान की, वह तत्त्व है— सत्य और अहिंसा। यह तत्त्व मिटाने से भी नहीं मिटता।

प्रश्न – (iii)लेखक ने गद्यांश में क्या सन्देश देना चाहा है?

उत्तर - लेखक ने इस गद्यांश में सत्य और अहिंसा के सिद्धान्त को जीवन में उतारने का सन्देश दिया है।

प्रश्न – (iv)गद्यांश में नैतिक और आध्यात्मिक स्त्रोत क्या है?

उत्तर - राष्ट्रीय एकता की भावना नैतिक और आध्यात्मिक स्रोत है।

प्रश्न – (v)किस मूर्त रूप के चलते-फिरते रहने की बात यहाँ कही गई है?

उत्तर- गांधीजी के रूप में राष्ट्रीय एकता के मूर्त रूप में चलते-फिरते रहने की बात यहाँ कही गई है।

प्रश्न – (vi)महात्मा गांधी ने कौन-सा अमरत्व हमारी सूखी हड्डियों में डाला?

अथवा हमें अमरत्व की याद दिलाकर किसने हमारे मृतप्राय शरीर में नए प्राण फूँके?

उत्तर- महात्मा गांधी ने हमें सत्य और अहिंसा के अमरत्व की याद दिलाकर हमारी सूखी हड्डियों में नई मज्जा डाल हमारे मृतप्राय शरीर में नए प्राण फूंके।

प्रश्न – (vii)मानवमात्र के जीवन के लिए क्या आवश्यक हो गया है?

उत्तर- मानवमात्र के जीवन के लिए सत्य और अहिंसा आवश्यक हो गए हैं।

प्रश्न – (viii) लेखक ने अमरत्व का स्रोत किसे बताया है?

उत्तर- लेखक ने अमरत्व का स्रोत सत्य और अहिंसा को बताया है।

(3) हमारी सारी संस्कृति का मूलाधार इसी अहिंसा-तत्त्व पर स्थापित रहा है। जहाँ-जहाँ हमारे नैतिक सिद्धान्तों का वर्णन आया है, अहिंसा को ही उनमें मुख्य स्थान दिया गया है। अहिंसा का दूसरा नाम या दूसरा रूप त्याग है और हिंसा का दूसरा रूप या दूसरा नाम स्वार्थ है, जो प्रायः भोग के रूप में हमारे सामने आता है। पर हमारी सभ्यता ने तो भोग भी त्याग ही से निकाला है और भोग भी त्याग में ही पाया है। श्रुति कहती है— 'तेन त्यक्तेन

भुञ्जीथाः'। इसी के द्वारा हम व्यक्ति-व्यक्ति के बीच का विरोध, व्यक्ति और समाज के बीच का विरोध, समाज और समाज के बीच का विरोध, देश और देश के बीच के विरोध को मिटाना चाहते हैं। हमारी सारी नैतिक चेतना इसी तत्त्व से ओत-प्रोत है।

अथवा जहाँ-जहाँ. .....ओत-प्रोत है।

अथवा अहिंसा का दूसरा नाम ..... ओत-प्रोत है। [801 (DE) 2023]

प्रश्न-(i)उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

***अथवा* गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।**

उत्तर- सन्दर्भ- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'गद्य-खण्ड'के 'भारतीय संस्कृति'नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक डॉ० राजेन्द्र प्रसाद हैं।

प्रश्न- (ii)रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर - रेखांकित अंश की व्याख्या – डॉ० राजेंद्र प्रसाद जी कहते हैं कि हमारी भारतीय संस्कृति का मुख्य आधार अहिंसा तत्त्व ही है। इसीलिए हमारे ग्रन्थों में जहाँ कहीं भी नैतिक सिद्धान्तों की बात कही गई है, वहाँ मन, वचन और कर्म से हिंसा न करने का उल्लेख अवश्य किया गया है। लेखक ने अहिंसा को त्याग का नाम दिया है। त्याग करना ही अहिंसा है और दूसरे रूप में अहिंसा ही त्याग है। अहिंसा और त्याग दोनों में कोई अन्तर नहीं है। ठीक इसी प्रकार हिंसा का दूसरा नाम स्वार्थ है। हिंसा ही स्वार्थ है और स्वार्थ का पर्याय हिंसा है। दोनों में उतना ही घनिष्ठ सम्बन्ध है, जितना अहिंसा और त्याग में एक मानव दूसरे मानव को कष्ट तब पहुँचाता है, जब वह स्वार्थ

के वश में हो जाता है। अतः स्वार्थ का दूसरा नाम हिंसा है और हिंसा अथवा स्वार्थ का अर्थ है— भोग। भारतीय दर्शन के अनुसार भोग की उत्पत्ति त्याग से हुई है और त्याग भी भोग में ही पाया जाता है। उपनिषद् में कहा गया है कि संसार का भोग, त्याग की भावना से करो। यहाँ त्याग में ही भोग माना गया है। भोग के लिए एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से झगड़ा करता है, लड़ता है और समाज में उसका विरोध करता है। भोग के कारण ही एक समाज दूसरे समाज से अथवा एक देश का दूसरे देश से संघर्ष होता है; अतः इन समस्त विरोधों को पूरी तरह नष्ट करने के लिए त्याग की भावना का उत्पन्न होना अनिवार्य है। त्याग की भावना मन में आते ही चित्त में अपार सुख अथवा शान्ति का अनुभव होने लगता है। इस प्रकार त्याग अथवा अहिंसा

भारतीय संस्कृति का वह तत्त्व है, जो संसार में व्याप्त समस्त व्यक्तिगत, सामाजिक, राजनैतिक, देश-विदेशगत विरोधों को समाप्त कर सकता है।

प्रश्न- (iii)हमारी संस्कृति का मूलाधार क्या रहा है?

उत्तर - हमारी संस्कृति का मूलाधार अहिंसा-तत्त्व रहा है।

प्रश्न- (iv)हमारे नैतिक सिद्धान्तों में किस चीज़ को प्रमुख स्थान दिया गया है? इसका दूसरा रूप क्या है?

***अथवा* नैतिक सिद्धान्तों में मुख्य स्थान किसका रहा है?**

उत्तर - हमारे नैतिक सिद्धान्तों में अहिंसा को प्रमुख स्थान दिया गया है। इसका दूसरा रूप त्याग है। अथवा नैतिक सिद्धान्तों में मुख्य स्थान अहिंसा का रहा है।

प्रश्न- (v) त्याग और स्वार्थ क्या है?

उत्तर - अहिंसा का दूसरा नाम त्याग और हिंसा का दूसरा नाम स्वार्थ है।

प्रश्न- (vi) स्वार्थ किस रूप में हमारे सामने आता है?

उत्तर - स्वार्थ प्रायः भोग के रूप में हमारे सामने आता है।

प्रश्न- (vii) हमारी सभ्यता की विशेषता क्या रही है?

उत्तर - हमारी सभ्यता की विशेषता यह रही है कि इसमें भोग भी त्याग से निकला है और भोग भी त्याग में ही पाया जाता है।

प्रश्न- (viii) हम किसके द्वारा व्यक्ति, समाज और देशों के बीच के विरोध को मिटाना चाहते हैं?

उत्तर - हम 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः'की भावना के द्वारा व्यक्ति, समाज और देशों के बीच के विरोध को मिटाना चाहते हैं।

प्रश्न- (ix) 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः'की भावना से क्या ओत-प्रोत है?

उत्तर - हमारी नैतिक चेतना 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः'की भावना से ओत-प्रोत है।

प्रश्न- (x) पारस्परिक विरोध को कैसे मिटाया जा सकता है?

उत्तर - पारस्परिक विरोध को 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः'की भावना के द्वारा मिटाया जा सकता है।

(4) पहले पहाड़ काटकर उसे खोखला कर दिया गया, फिर उसमें भवन बना लिए गए, जहाँ खम्भों पर उभारी मूरतें विहँस उठीं। भीतर की समूची दीवारें और छतें रगड़कर चिकनी

कर ली गईं और तब उनकी जमीन पर चित्रों की एक दुनिया ही बसा दी गई। पहले पलस्तर लगाकर आचार्यों ने उन पर लहराती रेखाओं में चित्रों की काया सिरज दी, फिर उनके चेले कलावन्तों ने उनमें रंग भरकर प्राण फूँक दिए। फिर तो दीवारें उमग उठीं, पहाड़ पुलकित हो उठे।

अथवा पहले पहाड़.....प्राण फूँक दिए।

प्रश्न- (i)उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर: सन्दर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'गद्य-खण्ड'के 'अजन्ता'नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक डॉ० भगवतशरण उपाध्याय हैं।

प्रश्न- (ii)रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- रेखांकित अंश की व्याख्या – अजन्ता की गुफाओं के निर्माण के समय उसकी दीवारों को रगड़कर चिकना करने के उपरान्त उन पर श्रृंखलाबद्ध चित्रों की रचना की गई। चित्रों के श्रृंखलाबद्ध होने के कारण उन्हें देखकर लगता है, मानो किसी क्षेत्र विशेष की सम्पूर्ण जानकारी उनमें उड़ेलकर एक अलग संसार ही उनमें बसा दिया गया है। दीवारों को घिसकर चिकना और समतल करने के उपरान्त उन पर पलस्तर लगाया गया है, फिर उस पर कला निष्णात आचार्यों ने रेखाओं के माध्यम से चित्रों को साकार किया। फिर उनके कलाविद शिष्यों ने उन चित्रों में रंग भरकर उन्हें इतना जीवन्त बना दिया, मानो वे अभी बोल उठेंगे।

प्रश्न- (iii)पहाड़ों को किस प्रकार जीवन्त बनाया गया है?

अथवा पहाड़ों को जीवन्त कैसे बनाया गया है? गद्यांश के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- पहाड़ों में गुफाओं की रचना करने के उपरान्त उनकी दीवारों और खम्भों को सजीव चित्रों के द्वारा जीवन्त बनाया गया है।

(5) कितना जीवन बरस पड़ा है इन दीवारों पर; जैसे फसाने- अजायब का भंडार खुल पड़ा हो। कहानी-से-कहानी टकराती चली गई है। बन्दरों की कहानी, हाथियों की कहानी, हिरनों की कहानी। कहानी क्रूरता और भय की, दया और त्याग की। जहाँ बेरहमी है वहीं दया का भी समुद्र उमड़ पड़ा है, जहाँ पाप है वहीं क्षमा का सोता फूट पड़ा है। राजा और कँगले, विलासी और भिक्षु, नर और नारी, मनुष्य और पशु सरकारों के हाथों सिरजते चले गए हैं। हैवान की हैवानियत को इंसान की इंसानियत से कैसे जीता जा सकता है, कोई

अजन्ता में जाकर देखे बुद्ध का जीवन हजार धाराओं में होकर बहता है। जन्म से लेकर निर्वाण तक उनके जीवन की प्रधान घटनाएँ कुछ ऐसे लिख दी गई हैं कि आँखें अटक जाती हैं, हटने का नाम नहीं लेतीं। [801 (DB) 2023]

अथवा कितना जीवन..... चले गए हैं?

अथवा जहाँ बेरहमीं.....नाम नहीं लेतीं।

प्रश्न- (i)उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर- सन्दर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक के 'गद्य-खण्ड'के 'अजन्ता'नामक पाठ से उद्धृत है। इसके लेखक डॉ० भगवतशरण उपाध्याय हैं।

प्रश्न- (ii)रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए |

Gyansindu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

उत्तर- रेखांकित अंशों की व्याख्या – प्रस्तुत अंश में लेखक ने अजन्ता की गुफाओं में बने चित्रों का भावात्मक वर्णन किया है। इन चित्रों की कलात्मक अभिव्यक्ति इतनी सजीव है, मानो वे मूर्ति न होकर जीते-जागते प्राणी हैं। उनमें संसार का जीवन बरस पड़ा है। मानो वे सांसारिक जीवन के विभिन्न पक्षों का अजायबघर हों और उसका दरवाजा खुला छोड़ दिया गया हो। उन चित्रों में बन्दरों, हाथियों और हिरनों आदि जीवों की अनेक कहानियाँ जीवन्त हैं।उन कहानियों में दया और त्याग की क्रूरता तथा दया की, पाप और क्षमा की कहानियाँ हैं। इन कहानियों में परस्पर विरोधी भावों का अंकन सर्वत्र देखने को मिलता है। उनमें यदि कहीं क्रूरता का चित्र है तो वहीं दूसरे चित्र में दया का समुद्र उमड़ता दिखता है। वहाँ यदि पाप का चित्रण है तो समीप ही

क्षमा का झरना भी कल-कल करता चित्रित है। राजाओं और कंगालों, विलासियों एवं भिक्षुओं, नर-नारियों, पशु एवं मनुष्यों के सजीव व्यक्तित्व कलाकार की सृजनात्मक अभिव्यक्ति में ढलते चले गए हैं। लेखक के अनुसार ये चित्र निरुद्देश्य नहीं हैं। ये चित्र और मूर्तियाँ हमें सिखाती हैं कि हैवान की हैवानियत को इंसान की इंसानियत से किस प्रकार सरलता से जीता जा सकता है। ऐसी शिक्षा अजन्ता की गुफाओं के अतिरिक्त और कहीं नहीं मिलती।

प्रश्न- (iii)'जीवन बरस पड़ा है'का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- यहाँ 'जीवन बरस पड़ा है'का आशय यह है कि अजन्ता के चित्रों में जीवन की झाँकियाँ जीवन्त हो उठी हैं।

प्रश्न- (iv)दीवारों पर बने चित्र किन-किन से सम्बन्धित हैं?

उत्तर- अजन्ता की गुफाओं की दीवारों पर बने चित्रों के विषय पशु पक्षी, राजा-रंक, विलासी भिक्षु नर-नारी आदि है, जिनके माध्यम से दया करता, भय, पाप, क्षमा आदि मनोभावों को चित्रित किया गया है।

प्रश्न- (v)अजन्ता के चित्र हमें क्या सीख देते हैं?

उत्तर- अजन्ता के चित्र हमे यह सीख देते हैं कि हैवान की हैवानियत को इंसान की इंसानियत से किस प्रकार जीता जा सकता है।

प्रश्न- (vi)कलाकारों के हाथों क्या सिरजते चले गए हैं?

उत्तर- कलाकारों के हाथो अजन्ता की दीवारों पर राजा, केंगले, विलासी, भिक्षु, नर नारी और मनुष्य तथा पशु आदि के चित्र सिरजते चले गए हैं।

प्रश्न- (v) कलाकारों ने किसके जीवन का चित्रांकन किया है?

उत्तर- कलाकारों ने बुद्ध के जीवन का चित्रांकन किया है।

पद्यांश

(1) दुसह दुराज प्रजानु कौं, क्यो न बढ़ै दुख-दंदु।
अधिक अँधेरौ जग करत, मिलि मावस, रबि चंदु।।

काव्यगत सौंदर्य -रस-शांत, छन्द-दोहा, अलंकार-दृष्टान्त, श्लेष, अनुप्रास, भाषा- ब्रज, गुण-प्रसाद

1. **उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।**

उत्तर- उपर्युक्त

2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- व्याख्या-दो राजाओं के असह्य राज्य में प्रजाजनों को दोहरा दुःख क्यों न बढ़ेगा, अर्थात् अवश्य बढ़ेगा? क्योंकि अमावस्या की तिथि को सूर्य और चन्द्रमा एक ही राशि में मिलकर संसार में और अधिक अँधेरा करते हैं।

3. संसार में अत्यधिक अँधेरा कब होता है?

उत्तर- संसार में अत्यधिक अँधेरा आमावस्या को होता है।

(2) बसै बुराई जासु तन, ताही को सनमानु।
भलौ भलौ कहि छोड़िये, खोटैं ग्रह जपु दानु।।

काव्यगत सौंदर्य -छन्द-दोहा, अलंकार-दृष्टान्त, पुनरूक्तिप्रकाश, अनुप्रास भाषा- ब्रज, गुण-प्रसाद

1. उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

उत्तर- उपर्युक्त

2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर-व्याख्या-कवि की उक्ति है कि जिसके शरीर में बुराई बसती है, उसी का (संसार में) सम्मान होता है। (देखो), भला ग्रह तो भला कहकर छोड़ दिया जाता है किन्तु खोटे ग्रह के आने पर जप, दान आदि किए जाते हैं।

3. **शनि, राहु, केतु तथा मंगल आदि ग्रहों की पूजा क्यों होती है?**
   उत्तर-शनि, राहु, केतु तथा मंगल आदि ग्रहों की पूजा अमंगलनाश हेतु होती है। क्योंकि ये ग्रह खोंटे (बुरे) होते हैं।
4. **कविवर बिहारी के अनुसार संसार में किसका सम्मान होता है?**
   उत्तर- कविवर बिहारी के अनुसार संसार में जिसके शरीर में बुराई निवास करती है।

(3) **बुरौ बुराई जौ तजै, तौ चितु खरौ डरातु।**
ज्यौं निकलंकु मयंकु लखि गनै लोग उतपातु।।

काव्यगत सौंदर्य -रस-शांत, छन्द-दोहा, अलंकार-दृष्टान्त, अनुप्रास, भाषा- ब्रज, गुण-प्रसाद

1. **उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।**
   उत्तर-उपर्युक्त

Gyansindu Coaching Classes | Join – Whatsapp Channel By Link | Subscribe for Live Class

2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–व्याख्या–यदि दुष्ट व्यक्ति अचानक ही अपनी बुराइयाँ छोड़ दे तो उससे भी लोगों के मन में शंका अर्थात् चित्त में अधिक डर बना रहता है। जैसे निष्कलंक चन्द्रमा को देखकर अपशकुनों की सम्भवना होने लगती है। शास्त्रों का कथन है कि चन्द्रमा के निष्कलंकरुप में उदित होने पर पृथ्वी पर उत्पात होने लगते हैं।

3. बुरा व्यक्ति यदि बुराई त्याग दे फिर भी हृदय क्यों डरता है?

उत्तर–क्योंकि जिस प्रकार चन्द्रमा के निष्कलंक होने पर लोग पृथ्वी पर उत्पात की शंका करने लगते हैं वैसे ही दुष्ट व्यक्ति यदि दुष्टता छोड़ दे तो भी उसके प्रति भय व शंका और बढ़ जाती है।

(4) जौ चाहत, चटक न घटै, मैलौ होइ न मित्त।
रज राजसु न छुवाइ तौ, नेह -चीकनो चित्त।।

काव्यगत सौंदर्य –रस–शांत, छन्द–दोहा, अलंकार–:पक, श्लेष, अनुप्रास, भाषा– ब्रज, गुण–प्रसाद

1. उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

उत्तर– उपर्युक्त

2. **रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।**

उत्तर-व्याख्या-हे मित्र यदि तुम चाहते हो कि तुम्हारे चित्त की चटक कभी कम न हो और वह मैला न हो तो प्रेमरुपी तेल से चिकने उस चित्त को गर्व, क्रोध आदि की रजोगुणी धूल का स्पर्श मत होने दो।

3. **गर्व और रजोगुण किसे मलिन बना देता है?**

उत्तर- गर्व और रजोगुण प्रेमरुपी स्नेह से चिकने हृदय को मलिन बना देता है।

(5) अतुलनीय जिसके प्रताप का, साक्षी है प्रत्यक्ष दिवाकर।
घूम-घूम कर देख चुका हैं, जिनकी निर्मल कीर्ति निशाकर।।
देख चुके हैं जिनका वैभव, ये नभ के अनन्त तारागण।
अगणित बार सुन चुका है नभ, जिनका विजय-घोश रण-गर्जन।।

काव्यगत सौंदर्य -रस-वीर, छन्द-मुक्त, अलंकार- अनुप्रास, पुनरूक्तिप्रकाश, भाषा-साहित्यिक खड़ी बोली, गुण-ओज।

Gyansindu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

1.उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

उत्तर- उपर्युक्त

2.रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

उत्तर-व्याख्या-कवि कहता है कि तुम उन पूर्वजों का स्मरण करो जिनके बेजोड़ प्रताप का सूर्य आज भी प्रत्यक्षरूप से साक्षी है। ये ही तो वे पूर्व पुरूष थे जिनकी धवल और स्वच्छ कीर्ति को यत्र-तत्र सर्वत्र घूम-घूमकर चन्द्रमा भी देख चुका है। हमारे पूर्वज ऐसे थे जिनके ऐश्वर्य को तारों का अनन्त समूह बहुत पहले दख चुका था। ऐसे थे हमारे पूर्वज, जिनके विजय-घोषों और युद्ध-गर्जनाओं को आकाश अनगिनत बार सुन चुका है, अर्थात हमारे पवित्र-चरित्र, पूर्वजों का प्रताप, यश, वैभव, युद्ध-कौशल आदि सब-कुछ अद्भुत और अभूतपूर्व था।

3.भारत देश के प्रताप का साक्षी कौन-कौन है?

उत्तर-भारत देश के प्रताप के साक्षी सूर्य, चन्द्रमा, आकाशएवं अनन्त तारागण है।

4.उपर्युक्त पद्यांश में 'दिवाकर' किसे कहा गया है?

उत्तर-सूर्य को।

5.प्रस्तुत पक्तियों में कवि ने किसका गरिमापूर्ण वर्णन किया है?

उत्तर–अपने पराक्रमी पूर्वजों गरिमापूर्ण वर्णन किया है।

(6) इन स्निग्ध लटों से छा दे तन
पुलकित अंको में भर विशाल,
झुक सस्मित शीतल चुम्बन से
अंकित कर इसका मृदुल भाल,
दुलरा दे ना, बहला दे ना
यह तेरा शिशु जग है उदास!
रूपसि तेरा घन–केश–पाश।

काव्यगत सौंदर्य –रस–वात्सल्य, छन्द–मुक्त, अलंकार–मानवीकरण, रूपक, रूपकातिशयोक्ति, भाषा–साहित्यिक खड़ी बोली, गुण–प्रसाद।

1. प्रस्तुत पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

उत्तर–उपर्युक्त

2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

Gyansindu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

उत्तर-व्याख्या-हे वर्षा! तुम्हारा बादल रूपी केश-पाश लहरा रहा है। तुम्हारा जगरूपी शिशु उदास-उदास दिखाई दे रहा है। तुम इसे दुलार दो, प्यार दो। जैसे माँ अपने बच्चे को गोद में लेकर तथा उसका नीचे को मुख करके उसे चूम लेती है, उसे दुलारती है,ऐसे ही तुम भी अपने जगरूपी शिशु को दुलार लो। बच्चे को प्यार करते समय माँ की बाल उसके ऊपर गिर जाती हैं और बच्चे का शरीर उनसे ढक जाता है। ऐसे ही हे रूप सी वर्षा ! तुम भी अपनी स्निग्ध लटों अर्थात् काले-काले बादलरूपी लटों से जगरूपी शिशु का शरीर ढक दो। इसे अपनी विशाल रोमांचित गोद में भर लो। नीचे की ओर झुको, आसमान से जमीन की ओर आओ और मुस्कराहट-भरे ठण्डे चुम्बन से संसार के मस्तक अर्थात पृथ्वी के ऊँचे उठे पर्वत आदि को ऐसे चूम लो जैसे माँ अपने बच्चे के कोमल मस्तक को चूम लेती है।

3. प्रस्तुत पंक्तियों में कौन-सा रस एवं अलंकार प्रयुक्त हुआ है?

उत्तर- उपर्युक्त काव्यगत सौंदर्य देखें।

4. यहाँ पर वर्षा का किस रूप में चित्रण हुआ है?

उत्तर-वर्षा का मातृत्वरूप में चित्रण हुआ है।

5. 'उदास' किसे बताया गया है?

उत्तर-संसादरूपी शिशु को।

6. किस रस का परिपाक है।

उत्तर–वात्सल्य रस का।

(7) टूटी है तेरी कब समाधि,
झंझा लौटे शत हार-हार,
बह चला दृगों से किन्तु नीर,
सुनकर जलते कण की पुकार!
सुख से विरक्त दुःख में समान!

काव्यगत सौंदर्य –रस–शांत, छन्द–मुक्त, अलंकार–मानवीकरण, पुन:क्तिप्रकाश,:पकातिशयोक्ति, भाषा–साहित्यिक खड़ी बोली, गुण–प्रसाद।

1. उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

उत्तर– उपर्युक्त

2. रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

Gyansindu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

उत्तर-**व्याख्या**-हे हिमालय! तू कठोर तपस्वी की भाँति समाधि लगाए हुए है। इस समाधि को आँधी के सैकड़ों झटके भी भंग नहीं कर सके। वे तो केवल टकराए और हार मानकर ही लौट गए।एक ओर तो तुममें इतनी कठोरता है और दूसरी ओर जब तुमने तीव्र धूप से तपे हुए, धूल के कण की चीत्कार सुनी, तो दया के कारण तुम्हारे नेत्रों से जलधारा फूट पड़ी। तुम सुख की कामना नहीं करते, अपितु सुख-दुःख में समान रहने वाले योगी हो।

3. हिमालय के कैसे स्वरूप को दर्शाया गया है?

उत्तर-हिमालय जहाँएक ओर कठोर है वहीं दूसरी तरफ उसके कोमल करूण स्वरूप को दर्शाया गया है।

4. जलते हुए कण की पुकार सुनकर किसकी आँखों से अश्रुधारा बहने लगी?

उत्तर- हिमालय की आँखों से अश्रुधारा बहने लगी।

5. महादेवी वर्मा जी ने हिमालय को किस रूप में देखा है?

उत्तर-महादेवी वर्मा जी ने हिमालय को कोमल एवं कठोर दोनों रूपों में देखा है।

व्याकरण

कर्मधारय समास

परिभाषा– जिसका पहला पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य अथवाएक पद उपमान तथा दूसरा पद उपमेय हो तो, वह 'कर्मधारय समास' कहलाता है।

यूपी बोर्ड परीक्षा मे बार-बार पूछे जाने वाले पद

1. **अधपका–** आधा है जो पका
2. **कनकलता–** कनक है जो लता
3. **चंद्रवदन–** चंद्र के समान वदन
4. **नील कमल–** नीला है जो कमल
5. **नील गगन–** नीला है जो गगन
6. **नीलमणि–** नीली है जो मणि
7. **नीलांबर–** नीला है जो अम्बर

8. **प्रधानमंत्री–** प्रधान है जो मंत्री
9. **प्रधानाध्यापक–** प्रधान है जो अध्यापक
10. **शुभकर्म–** शुभ है जो कर्म
11. **श्वेतकमल–** श्वेत है जो कमल
12. **श्वेतवस्त्र–** श्वेत है जो वस्त्र
13. **सत्पुरुष–** सत है जो पुरुष
14. **स्वर्णकलश–** स्वर्ण का है जो कलश
15. **अल्पज्ञान–** अल्प है जो ज्ञान
16. **चंद्रधर–** चंद्र को धारण करने वाला अर्थात् शिव
17. **चंद्रशेखर–** चंद है जिसके सिर पर अर्थात् शिव
18. **चक्रपाणि–** चक्र है पाणि में जिनके अर्थात् विष्णु भगवान
19. **चरण–कमल–** कमल के समान चरण
20. **परमानंद–** परम है जो आनन्द
21. **महात्मा–** महान है जो आत्मा

22. **महामानव–** महान है जो मानव
23. **मृगनयन–** मृग जैसे नयन
24. **यशोधन–** यश है धन जिसका
25. **शुभागमन–** शुभ है जो आगमन
26. **श्वेतांबर–** श्वेत है जो वस्त्र
27. **चंद्रमुख–** चंद्र है जो मुख

संस्कृत

कोकिल! यापय दिवसान् तावद् विरसान् करीलविटपेषु।

यावन्मिलदलिमालः कोऽपि रसालः समुल्लसति।।3

अनुवाद – हे कोयल! तब तक तुम अपने नीरस दिनों को करील के वृक्षों पर ही बिताओ जब तक भौंरों से युक्त कोई आम्रवृक्ष विकसित न हो।

रे रे चातक ! सावधानमनसा मित्र ! क्षणं श्रूयताम्।

अम्भोदा बहवो हि सन्ति गगने सर्वेऽपि नैतादृशाः।।

केचिद् वृष्टिभिरार्द्रयन्ति वसुधां गर्जन्ति केचिद् वृथा।

यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः।।

अनुवाद – हे मित्र चातक ! सावधान मन से क्षण भर सुनो। आकाश में अनेक बादल रहते हैं, पर सभी ऐसे (उदार) नहीं होते। कुछ तो वर्षा से पृथ्वी को गीला कर देते हैं, (पर) कुछ व्यर्थ ही गरजते हैं। जिस-जिस को देखते हो उस-उस के सामने दीन वचन मत बोलो। (अर्थात हर एक से माँगना उचित नहीं; क्योंकि हर एक व्यक्ति दानी नहीं होता)।

न वै ताडनात् तापनाद् वह्निमध्ये न वै विक्रयात् क्लिश्यमानोऽहमस्मि ।
सुवर्णस्य मे मुख्यदुःखं तदेकं यतो मां जना गुञ्जया तोलयन्ति ।। 5 ।।

अनुवाद – मैं (स्वर्ण) न तो पीटे जाने से, न अग्नि में तपाए जाने से और न बेचे जाने से दुःखी होता हूँ। मुझ सुवर्ण का एक ही दुःख है कि लोग मुझको (घुंघुची) से तोलते हैं, यही दुःख है ।।

भौंरा कमल में बन्द हो गया, वह रातभर यही सोचता रहा कि –

रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति सुप्रभातं, भास्वानुदेष्यति हसिष्यति पंकजालिः।

इत्थं विचिन्तयति कोशगते द्विरेफे, हा हन्त! हन्त! नलिनी गज उज्जहार।।6

रात्रि समाप्त होगी, प्रातःकाल होगा, सूर्य उदित होगा, कमल-समूह विकसित होगा। "दुःख का विषय है कि कमल-कोश में बन्द भौरे के इस प्रकार विचार-

मग्न होने पर, किसी हाथी ने कमलिनी को उखाड़ लिया। (अर्थात् व्यक्ति सोचता कुछ है, जब कि ईश्वर कुछ और ही कर देता है)

पत्र-लेखन

अनौपचारिक-पत्र-पिता को पत्र

राधा कृष्ण कॉलोनी,
मथुरा, उत्तर प्रदेश।
दिनांकः 02/08/2023
पूज्य पिताजी,
सादर चरण स्पर्श!

मैं यहाँ पर सकुशल हूँ और आपकी सपरिवार कुशलता के लिए ईश्वर से सदैव प्रार्थना करता हूँ। आपके द्वारा प्रेषित पत्र तथा मनीऑर्डर दोनों एक ही दिन मिले हैं। इस समय मेरी पढ़ाई अच्छी तरह से चल रही है।

अब वार्षिक परीक्षा के लिए लगभग एक माह शेष है। मैं आजकल सभी विषयों का नियमित अध्ययन करता हूँ। अंग्रेजी और हिन्दी की तीन बार आवृत्ति कर चुका हूँ। सामान्य ज्ञान और समाजशास्त्र का कोर्स

Gyansindu Coaching Classes
Join – Whatsapp Channel By Link
Subscribe for Live Class

भी दो बार पूरा कर लिया है। अब गणित की विशेष तैयारी में लगा हुआ हूँ। आजकल मैं रात में साढ़े दस बजे तक पढ़ता हूँ और फिर सो जाता हूँ, और चार बजे उठकर अध्ययन करने लग जाता हूँ। इस तरह मेरा अध्ययन क्रम नियमित चल रहा है और आपके आशीर्वाद से मुझे प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने की पूर्ण आशा है।

आप मेरी ओर से निश्चिंत रहें, मैं परीक्षा के बाद ही आपके पास आ पाऊँगा। पूज्य माताजी को चरण-स्पर्श तथा निशा व आदित्य को प्यार।

कुशल पत्र की प्रतीक्षा में।

आपका आज्ञाकारी पुत्र
धीरेन्द्र यादव